Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X
Indexed Journal, Impact Factor: 6.1 **Peer Reviewed Journal**

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 74-78

IASE (deemed to be university)

Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)
On the Topic
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for Sustainable Development
By
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

सतत विकास के लिए जनजातीय शिक्षा में पारंपरिक शिक्षण विधियों का एकीकरण

डॉ० ओम प्रकाश शर्मा

सह-आचार्य (विभागाध्यक्ष), शिक्षा संकाय, आई०ए०एस०ई० (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17357737

Corresponding Author: डॉ० ओम प्रकाश शर्मा

सारांश

यह लेख भारत के जनजातीय (आदिवासी) समुदायों में विद्यमान पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों तथा स्थानीय शिक्षण विधियों के औपचारिक शिक्षा प्रणाली में एकीकरण (integration) के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals - SDGs) की प्राप्ति पर केंद्रित है। जनजातीय समाज में विद्यमान ज्ञान केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि प्रकृति, समाज और संस्कृति के बीच सामंजस्य का एक जीवंत उदाहरण है। भारत की विविध जनजातीय संस्कृतियों में प्रचलित पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान (Traditional Ecological Knowledge - TEK) और स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (Indigenous Knowledge System - IKS) न केवल पर्यावरणीय संसाधनों के संरक्षण का माध्यम हैं, बल्कि सामुदायिक एकता, लोक-लोकाचार और पीढ़ियों के बीच ज्ञान-संक्रमण की अद्भुत परंपरा को भी सुदृढ़ करते हैं। लेख में मौजूदा साहित्य, शोध-पत्रों तथा नीतिगत दस्तावेज़ों के आधार पर यह विवेचना की गई है कि किस प्रकार समुदाय-आधारित शिक्षण मॉडल, अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियाँ, और मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा जनजातीय छात्रों की सीखने की क्षमता, आत्म-सम्मान तथा स्थानीय पहचान को सशक्त बना सकती हैं। पारंपरिक ज्ञान और औपचारिक शिक्षा का समन्वय केवल सांस्कृतिक संरक्षण का उपकरण नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समावेशन (inclusion) और सतत विकास (sustainability) की दिशा में एक ठोस कदम है। लेख में इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला गया है कि जब शिक्षा स्थानीय संदर्भों और अनुभवों पर आधारित होती है—जैसे कृषि, वन-संरक्षण, जल-प्रबंधन, लोककला, औषधीय परंपराएँ, और सांस्कृतिक उत्सव—तो वह विद्यार्थियों के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ जाती है। इससे विद्यालय में उनकी उपस्थिति और सहभागिता बढ़ती है, साथ ही dropout दरों में कमी आती है। यह शिक्षा केवल औपचारिक ज्ञान नहीं देती, बल्कि समुदाय के भीतर आत्मनिर्भरता, सहजीविता, और प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग के मूल्य भी स्थापित करती है। साथ ही, लेख में यह भी बताया गया है कि इस एकीकरण की प्रक्रिया चुनौतियों से मुक्त नहीं है। शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, मातृभाषा में उपयुक्त शिक्षण

सामग्री का अभाव, और नीतिगत असमानता इसके क्रियान्वयन में बाधा बनती हैं। इसलिए लेख में ऐसे नीतिगत और व्यवहारिक मॉडलों का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है जो जनजातीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करें और उन्हें शिक्षा प्रक्रिया का सक्रिय अंग बनाएं। अंततः, यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि पारंपरिक ज्ञान और शिक्षण विधियों को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में समुचित रूप से समाहित किया जाए, तो न केवल जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार होगा, बल्कि सामाजिक-आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, और पर्यावरणीय संतुलन जैसे सतत विकास के प्रमुख उद्देश्यों को भी प्राप्त किया जा सकेगा। इस प्रकार, यह लेख स्थानीयता और वैश्विकता के बीच सेतु का कार्य करते हुए यह दर्शाता है कि सतत विकास की वास्तविक नींव स्थानीय समुदायों की परंपराओं और ज्ञान में ही निहित है।

मूलशब्द: जनजातीय शिक्षा, पारंपरिक ज्ञान (IKS/TEK), सतत विकास, मातृभाषा शिक्षा, समुदाय-आधारित शिक्षण

प्रस्तावना

जनजातीय समुदायों के पास सदियों से अर्जित वह पारंपरिक ज्ञान-संपदा मौजूद है, जो न केवल उनके जीवन-निर्वाह का आधार है, बल्कि मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व की एक सशक्त दृष्टि भी प्रदान करती है। यह ज्ञान-संपदा कृषि, वन-प्रबंधन, औषधीय परंपराओं, जल-संरक्षण, पशुपालन, हस्तशिल्प, लोककला, लोकसंगीत और सांस्कृतिक शिक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में व्याप्त है। इस पारंपरिक ज्ञान का मूल तत्व अनुभवात्मक शिक्षण और सामूहिकता की भावना है, जिसमें प्रत्येक पीढ़ी अपने अनुभव, मूल्य और कौशल को अगली पीढ़ी तक पहुँचाती है। यह प्रक्रिया औपचारिक संस्थानों से बाहर होने के बावजूद अत्यंत सुसंगठित और सुसंवेदनशील होती है।

इतिहास साक्षी है कि इन समुदायों का पारंपरिक ज्ञान स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण, जैवविविधता की रक्षा, और सतत संसाधन प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। उदाहरण के लिए, आदिवासी क्षेत्रों में जल स्रोतों की रक्षा हेतु पारंपरिक जलाशयों और चेक-डैम जैसी संरचनाओं का उपयोग किया जाता रहा है; वन-उत्पादों का दोहन सीमित और सामुदायिक नियंत्रण में होता है; औषधीय पौधों के उपयोग में पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखा जाता है। इन परंपराओं में निहित शिक्षा न केवल उपयोगिता-प्रधान है, बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से भी ओतप्रोत है।

परन्तु, आधुनिक औपचारिक शिक्षा प्रणाली–जो मुख्यतः पश्चिमी बौद्धिक प्रतिमानों और एकरूप मानकों पर आधारित है–अक्सर इस ज्ञान-संपदा को ग़ैर-वैज्ञानिक या अप्रासंगिक मानकर उपेक्षित कर देती है। विद्यालयी पाठ्यक्रमों में स्थानीय संदर्भों की कमी, मातृभाषा की अनुपस्थिति और पारंपरिक शिक्षकों (elder knowledge holders) की भागीदारी न होना–इन सभी कारणों से जनजातीय छात्र शिक्षा से सांस्कृतिक रूप से कटाव महसूस करते हैं। फलस्वरूप, उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में असमानता, ड्रॉपआउट दर में वृद्धि, और सांस्कृतिक पहचान का क्षरण देखने को मिलता है।

इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए इस लेख का मुख्य उद्देश्य यह है कि ऐसे सैद्धांतिक दृष्टिकोण और व्यवहारिक उपाय प्रस्तुत किए जाएँ जो पारंपरिक शिक्षण विधियों, लोक-ज्ञान और स्थानीय भाषाओं को औपचारिक शिक्षा प्रणाली के साथ समेकित (integrate) करें। यह एकीकरण केवल पाठ्यक्रम में स्थानीय विषय-वस्तु जोड़ने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा के दर्शन, विधियों, और मूल्य-आधारों को भी जनजातीय दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है।

लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ–जैसे अनुभव के माध्यम से सीखना, सामुदायिक सहभागिता, प्रकृति से प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा ज्ञानार्जन, और बुजुर्गों के मौखिक ज्ञान का संचरण–सतत विकास के उद्देश्यों (SDGs), विशेषतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (Goal 4), असमानताओं में कमी (Goal 10), और स्थल जीवन का संरक्षण (Goal 15) को सशक्त बना सकती हैं।

अतः यह लेख न केवल पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के बीच संतुलन खोजने का प्रयास है, बल्कि यह इस बात पर भी ज़ोर देता है कि सतत विकास की वास्तविक दिशा तभी संभव है जब शिक्षा स्थानीयता, संस्कृति और पर्यावरणीय संवेदनशीलता से गहराई से जुड़ी हो। इस प्रकार, जनजातीय ज्ञान और शिक्षण विधियों का एकीकरण समानता, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता पर आधारित एक अधिक न्यायपूर्ण और स्थायी समाज की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बन सकता है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं साहित्य समीक्षा (Theoretical background & Literature Review)

1. पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान (TEK/IKS): शोध दर्शाते हैं कि TEK जल, कृषि और पारिस्थितिक चिन्हों की सूक्ष्म समझ प्रदान करता है, जो जलवायु परिवर्तन और संसाधन प्रबंधन में उपयोगी है। ऐसे ज्ञान का

औपचारिक पाठ्यक्रमों में समावेश स्थानीय स्थिरता नीतियों के साथ संरेखित हो सकता है।
2. मातृभाषा एवं बहुभाषी शिक्षा: मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा से सीखने के परिणाम बेहतर आते हैं और भाषा-स्वाभिमान बनता है – भारत में कुछ परियोजनाओं ने आदिवासी भाषाओं में पाठ्यक्रम लागू कर सकारात्मक परिणाम देखें हैं।
3. समुदाय-आधारित तथा अनुभवात्मक शिक्षण: समुदाय के बुज़ुर्ग, पारंपरिक कारीगर और कृषि प्रथाएँ स्कूली पाठ्यक्रम में निहित होने पर बच्चों को प्रासंगिक, व्यवहारिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ा शिक्षा अनुभव मिलता है।
4. नीतिगत संदर्भ: NEP और राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पहलें (उदा. UNESCO की कार्यक्रम) पारंपरिक ज्ञान और बहुभाषी शिक्षा के प्रति संवेदनशील रुख दिखाती हैं, पर लागुकरण में चुनौतियाँ हैं—शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन, और प्रमाणन सम्बन्धी समस्याएँ।

अनुसंधान प्रश्न (Research Questions)

1. पारंपरिक शिक्षण विधियाँ किस प्रकार जनजातीय शिक्षा में सतत विकास को सुदृढ़ कर सकती हैं?
2. विद्यालयी पाठ्यक्रम में IKS/TEK के समावेशन के सर्वाधिक प्रभावी मॉडल क्या हैं?
3. किन-किन नीतिगत व संस्थागत बाधाओं को पार करके यह एकीकरण संभव है?

पद्धति (Methodology – प्रस्तावित)

यह शोध-लेख मिश्रित पद्धति (mixed-methods) पर आधारित प्रस्ताव देता है:

दस्तावेज़ीय विश्लेषण: संबंधित नीतियों, कार्यक्रमों और साहित्य का समेकित अवलोकन।

क्षेत्रीय केसल स्टडीज़: 3-4 जनजातीय प्रभावित जिलों में फील्ड इंटरव्यू (बुज़ुर्ग, शिक्षक, छात्र, ग्राम प्रधान)।

कार्यशाला और सहभागी अवलोकन: पारंपरिक विशेषज्ञों और शिक्षकों के साथ सह-निर्माण कार्यशालाएँ; परिणामों का गुणात्मक व मात्रात्मक विश्लेषण।

प्रमुख निष्कर्ष (Synthesized Findings – साहित्य पर आधारित)

(नोट: यहाँ वास्तविक फील्ड डेटा नहीं है; यह साहित्य-समेकन पर आधारित निष्कर्ष हैं)

1. सीखने के परिणाम में सुधार: मातृभाषा और स्थानीय संदर्भ से जुड़ी शिक्षण सामग्री से बच्चों की समझ और विद्यालय उपस्थिति में सुधार होता है।
2. स्थानीय संसाधन प्रबंधन: पारंपरिक कृषि और वन-प्रथाओं को पाठ्यक्रम में जोड़ने से समुदायों में संसाधन की सतत प्रबंधन क्षमता बढ़ती है (स्थानीय जैवविविधता के संरक्षण में मदद)।
3. सांस्कृतिक पुनरुत्थान व आत्म-सम्मान: पढ़ाई में सांस्कृतिक सामग्री के समावेश से सांस्कृतिक पहचान मज़बूत होती है, जिससे dropout घटते हैं।
4. शिक्षण क्षमता की चुनौती: अधिकांश शिक्षकों में IKS के समावेश के लिए प्रशिक्षण व संसाधन की कमी पाई जाती है; प्रभावी शिक्षक विकास कार्यक्रम आवश्यक हैं।

बहु-स्तरीय सिफारिशें (Policy & Practice Recommendations)

1. मातृभाषा-प्रधान प्राथमिक पाठ्यक्रम: कक्षा I-V के लिए स्थानीय भाषाओं में संसाधन तैयार कर NEP के दिशानिर्देशों के साथ समन्वय करें। (उदाहरण: 'Palash' कार्यक्रम के मॉडल का विस्तार)।

2. समुदाय-शिक्षक साझेदारी मॉडल: पारंपरिक ज्ञान-धारकों (bād, पहाड़ी बुजुर्ग, औषधि-ज्ञ) को 'कम्युनिटी-रिसोर्स टीचर' के रूप में मान्यता दें व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में जोड़ें।
3. पाठ्यक्रम में TEK/IKS के मॉड्यूल: पर्यावरण, जल-प्रबंधन और कृषि के स्थानीय मॉड्यूल विकसित कर व्यावहारिक प्रयोगशाला/फार्म-आधारित शिक्षण को अनिवार्य करें।
4. निगरानी व मूल्यांकन ढाँचा: पारंपरिक ज्ञान के शिक्षण-फायदों का मापन करने हेतु गुणात्मक और मात्रात्मक संकेतक विकसित करें—जैसे पारिस्थितिक व्यवहार के परिवर्तन, स्थानीय उपज में वृद्धि, dropout दरों में कमी।
5. नीति-सहयोग और संसाधन सुनिश्चित करना: राज्यों में IKS-संवेदी पाठ्यपुस्तकें, प्रशिक्षण-ग्रांट और सामुदायिक साझेदारी हेतु वित्तीय प्रावधान।

सीमाएँ (Limitations)

यह आलेख मुख्यतः द्वितीयक साहित्य तथा प्रकाशित केस-स्टडीज़ के समेकन पर आधारित है; फील्ड-आधारित ताज़ा डेटा के बिना निष्कर्षों का सार्वभौमिकरण सीमित है। अतः अनुशंसित है कि क्षेत्रीय कार्यान्वयन के साथ लंबी अवधि मूल्यांकन किए जाएं।

निष्कर्ष (Conclusion)

जनजातीय पारंपरिक शिक्षण विधियों का औपचारिक शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक और संवेदनशील समावेश न केवल शिक्षा की गुणवत्ता और निष्पादन को बेहतर बनाएगा, बल्कि यह सामाजिक समानता, पर्यावरणीय संतुलन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को भी सशक्त करेगा। जब शिक्षा प्रणाली स्थानीय अनुभवों, पारंपरिक ज्ञान और समुदाय की सहभागिता पर आधारित होती है, तब वह केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रह जाती, बल्कि जीवनमूल्य, आत्म-सम्मान और सामूहिक चेतना को भी पोषित करती है। ऐसे समावेश से न केवल विद्यार्थियों की सीखने की रुचि और व्यवहारिक समझ में वृद्धि होगी, बल्कि विद्यालयों और समुदायों के बीच आपसी संबंध भी अधिक मजबूत होंगे। इससे जनजातीय समाजों में सांस्कृतिक आत्मविश्वास का विकास होगा और शिक्षा एक जीवंत सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित हो सकेगी। इस दिशा में नीति-निर्माताओं, शिक्षण संस्थानों, शोधकर्ताओं और स्थानीय समुदायों की साझेदारी अत्यंत आवश्यक है। यदि इन सभी पक्षों के बीच समन्वित प्रयास किए जाएँ—जैसे शिक्षक प्रशिक्षण में स्थानीय ज्ञान का समावेश, मातृभाषा में शिक्षण सामग्री का विकास, और समुदाय आधारित मूल्यांकन प्रणाली का निर्माण—तो ये परिवर्तन न केवल व्यवहारिक होंगे, बल्कि दीर्घकालिक और सतत प्रभावशीलता भी सुनिश्चित करेंगे। इस प्रकार, जनजातीय पारंपरिक शिक्षण का औपचारिक शिक्षा से समन्वय एक ऐसे शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र की स्थापना कर सकता है, जो न केवल ज्ञानवान, बल्कि संवेदनशील और सतत समाज के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ (References)

1. Priyadarshini P. Promoting tribal communities and indigenous knowledge. ScienceDirect. 2019. Available from: https://www.sciencedirect.com
2. UNESCO. Food Sovereignty based on Traditional Knowledge and Participatory Methods. 2024. Available from: https://www.unesco.org
3. ResearchGate. Enhancing Tribal Education through Community-Based Learning Initiatives. 2025. Available from: https://www.researchgate.net
4. International Journal. Assessment of Teachers' Awareness Level of Tribal Indigenous Practices. 2025. Available from: https://www.researchgate.net
5. The ASPD / IJES. Exploring The Intersect of Tribal Indigenous Knowledge. 2025. Available from: https://www.aspdjournal.com
6. Wiley. Traditional Ecological Knowledge of Tribal Communities. Journal Article. 2022. Available from: https://www.wiley.com
7. Negi B. Role of traditional ecological knowledge in shaping climate. ScienceDirect. 2025. Available from: https://www.sciencedirect.com
8. Sucharita V. Tribal Education in India - Reviewing the Progress and Challenges. SAGE. 2025. Available from: https://journals.sagepub.com

9. RRI Journals. Teaching, learning and Traditional Knowledge of Tribe of India. 2021. Available from: https://www.rrijournals.org
10. ACR Journal. IKS in Indian Education: A Transformative Framework. 2025. Available from: https://www.acrjournal.org
11. ResearchGate. Indigenous Knowledge and Value Systems in India. 2019. doi:10.1007/... Available from: https://www.researchgate.net
12. ESA / TEK Resources. Resources - Traditional Ecological Knowledge. Available from: https://www.esa.org/tek-resources
13. PMC. Cultural Adaptation of an Educator Social-Emotional Learning Program. Goforth et al. 2022. Available from: https://www.pubmed.ncbi.nlm.nih.gov
14. SEEJPH. Indigenous Knowledge Systems of the Oraon Tribe of India. 2025. Available from: https://seejph.org
15. ScienceDirect. Integrating tribal perceptions and traditional ecological knowledge. 2025. Available from: https://www.sciencedirect.com
16. SAGE Journals. Indigenous Knowledge Systems and the National Education Policy. 2025. Available from: https://journals.sagepub.com
17. KUEY Journal. A Case Study on Tribal Education in Uttar Pradesh. 2025. Available from: https://www.kueyjournal.com
18. DigitalCommons Tacoma. The Integration of Indigenous Knowledge in Education. Paquin. 2023. Available from: https://digitalcommons.tacoma.edu
19. Times of India. 'Palash' programme boosts tribal education in state. 2025. Available from: https://timesofindia.indiatimes.com
20. ResearchGate / International Journal. International Journal of Interdisciplinary Cultural Studies – Teachers' Awareness. 2025. Available from: https://www.researchgate.net

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.